Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. IV, Issue VII, July-2012, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

छायावादी कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला की रचनाओं एवं उनके काव्य में नारी के स्थान का अध्ययन

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. IV, Issue VII, July-2012, ISSN 2230-7540

छायावादी कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला की रचनाओं एवं उनके काव्य में नारी के स्थान का अध्ययन

Santosh

Research Scholar, Singhania University, Jhunjhunu, Rajasthan, India

----------♦----------

प्रस्तावना एवं पृष्ठभूमि

हिन्दी साहित्य आदिकाल से नवयुग तक की दीर्घ प्रवाहिनी अनेक महान रचियताओं के आवरण से पूर्ण है, जिन्होंने अपने युगानुभव का जीवन्त चित्रण अपने काव्य में कर समाज में जागृति का अद्‌भुत संचार किया।

आधुनिक काल के स्वर्णयुग 'छायावाद' में एक ऐसी ही कवि प्रतिभा सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' हैं, जो किसी एक अवधि, एक काव्यधारा विशेष अथवा समाज एवं राष्ट्र की परिसीमा में कभी न बँध सके।

निराला का जीवन पौरूषमय पर्वत से निःसृत करूणानीर से प्रवाहित स्त्रोतवाहिनी का भव्य दृष्टान्त है। जीवनक्रम में विभिन्न आरोही–अवरोहों ने जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त उनके मानस एवं तत्सृजित साहित्य को एक अद्‌भुत गतिशील सौष्ठव दिया है।

हिन्दी साहित्य की अमर विभूति महाप्राण निराला जी का जन्म सन् 1867 ई0 में बंगाल के महिषादल राज्य में हुआ था वैसे तो इनके पूर्वज उत्तर प्रदेश उन्नाव जिले के 'गढ़ाकोला' के निवासी थे। इसी गाँव के निम्न–कान्यकुब्ज ब्राह्मण समाज में एक परिवार 'निराला के पितामह पंडित शिवधारी तिवारी का था जिनके तृतीय पुत्र रामसहाय तिवारी जीविकार्जन के लिए बंगाल में पुलिस सेवा में नियुक्त हुए, बंगाल स्थित महिषादल राज्य में सिपाही के पद पर कार्य करते–करते राज्यकोष संरक्षक के आसन तक इन्होनें उन्नति की। पं0 रामसहाय तिवारी के प्रथम एवं एकमात्र पुत्र सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' थे। प्रथम पत्नी का निधन होने के पश्चात् निःसन्तान होने के कारण इन्होंने दूसरा विवाह रूक्मिणी देवी से किया। रूक्मिणी देवी अत्यन्त सुशील, रूपवती महिला थी। धार्मिक संस्कारों में विशेष रूचि रखती थी।''

''माघ शुक्ल एकादशी सम्वत् 1653 (सन् 1867) ई0 को इस जन्मदात्री ने पुत्र को जन्म दिया जिसका नाम सूर्ज कुमार तथा साहित्य क्षेत्र में सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' प्रसिद्ध हुआ।''

दुर्भाग्य से माँ की वाल्सल्य वर्षा कवि की मन–अवनि पर अधिक समय न हो सकी तथा पुत्र की तीन वर्ष की आयु होते ही रूक्मिणी देवी का शरीरान्त हो गया।

माँ के अभाव तथा पिता की देखरेख में निराला का शैशवकाल व्यतीत हुआ पिता कर्मठ तथा अनुशासनप्रिय व्यक्ति थे। अतः पिता के कठोर नियन्त्रण में ही निराला को लाड़–दुलार मिला।

आठ वर्ष की अवस्था में निराला का यज्ञोपवीत संस्कार हुआ समाज के वर्गगत भेद के प्रति विद्रोह का भाव इस अवसर पर उनके हृदय में प्रथमतः उत्थित हुआ।

महिषादल में निराला की शिक्षा प्रारम्भ हुई। इन्होंने सामान्य प्राथमिक शिक्षा बंगला पाठशाला में ही प्राप्त की अध्ययन पूर्ण होने के बाद उन्हें महिषादल हाईस्कूल में भेजा गया।

इस विद्यालय से अंग्रेजी एवं संस्कृत की सामान्य शिक्षा प्राप्त हुई महिषादल में रहने के कारण कवि बंगला भाषा से मातृभाषावत् परिचित थे किन्तु हिन्दी के स्थान पर उन्हें अवधी एवं वैसवाड़ी का ही ज्ञान था इनकी विद्यालय शिक्षा नवीं कक्षा तक ही रही उच्चशिक्षा प्राप्त करने में उनकी रूचि शेष न रही। हाईस्कूल के पठनकाल में ही इन्होंने संगीत, घुड़सवारी तथा कुश्ती में दक्षता प्राप्त की, क्रिकेट और फुटबाल खेलने में प्रवीण रहे।

तरूणावस्था एवं वैवाहिक जीवनः–

चौदह वर्ष की अवस्था में निराला का विवाह–सम्बन्ध पंडित रामदयाल द्विवेदी की पुत्री मनोहरा देवी से हुआ, मनोहरा देवी सौन्दर्य शीला तो थी ही पढ़ी–लिखी तथा सादा ग्रहस्थ जीवन व्यतीत करने वाली कर्मठ नारी भी थी इस सक्षम नारी के ज्ञान–प्रकाश से अभिभूत होकर निराला संगीत एवं साहित्य के आकर्षण से बंध सके।

''प्रिया–प्रणय के प्रलोभन के कारण निराला हाईस्कूल की परीक्षा में अनुत्तीर्ण हुए तथा प्रथम बार पिता के कोपभाजन बने। तरूणावस्था में निराला पिता के ही आश्रय पर पत्नी सहित पोषित हो रहे थे, ग्रहस्थी का दायित्व–भार उनके कन्धों पर नहीं था और समाज के नियमों एवं परम्पराओं का उल्लंघन करना उन्हें प्रिय था अतः पिता द्वारा गृह–निष्कासन पर वे श्वसुरालय में चले गये जहाँ उनका भव्य सत्कार हुआ यही से उनकी हिन्दी की ओर रूचि तथा साहित्य साधना प्रारम्भ हुई।''

निरन्तर अस्वस्थता के उपरान्त हार्निया से पीड़ित पिता की मृत्यु सन् 1917 ई0 में हो गई स्वछन्द एवं उच्छंखल जीवन जीने वाले निराला को पिता के अभाव में गृहस्थ जीवन के उत्तरदायित्व का प्रथमतः अनुभव हुआ।

परिवार के भरण–पोषण के लिए उन्होंने महिषादल प्रस्थान किया, पिता से अधिक शिक्षित होने के कारण इन्हें चिट्ठी–पत्री, तहसील–वसूली तथा कचहरी–अदालत से सम्बन्धित काम–काज साधारण वेतन पर प्राप्त हुआ। गृहस्थ जीवन की ओर गम्भीर होते ही निराला के प्रतिकूल भाग्य ने इनके वैवाहिक सुख को अल्प युवावस्था में ही समाप्त कर दिया।

श्वसुर गृह में पुत्र एवं पुत्री को जन्म देकर सन् 1918 में श्रीमती मनोहरा देवी ने अन्तिम प्रस्थान किया। सन् 1914 में प्रथम विश्वयुद्ध की समाप्ति पर फैले इन्फ्लुएंजा के महारोग ने इनके

परिवार के अधिकाँश सदस्यों को ग्रस लिया दाम्पत्य जीवन के प्रथम चरण पर ही एकाँकी रह गये निराला के कन्धों पर चचेरे भाई के बच्चों समेत छः बाल सदस्यों का पालन–भार आ गया अतः निराला धनार्जन के उद्देश्य से पुनः महिषादल में कार्यरत हो गये।

शोध रूप रेखा :–

इस शोध प्रबन्ध में हम मुख्य रूप से छायावादी कवि निराला के काव्य में नारी एवं छायावाद में नारी के स्थान का अध्ययन करेगे ।

जब कोई नव काव्य–धारा साहित्य में अपना स्थान बनाती है तो उसके पीछे अनेक प्रेरक शक्तियाँ होती हैं। छायावाद या निराला काव्य की पृष्ठभूमि भी बहुमुखी है। साहित्यक और सामाजिक परिस्थितियों का इस पर विशेष प्रभाव पड़ा है। खड़ी बोली ने कविता में अभी स्थान बनाया ही था कि द्विवेदी काल में भाषा में व्यवस्था और एकरूपता तो आई और उसकी काव्योपयोगिता सिद्ध करने में भी द्विवेदी युगीन कवि प्रयत्नशील थे।

द्विवेदी युगीन कविता नैतिकता, इतिवृत्तात्मक और बहुमुखी प्रवृत्ति से बँधी हुई थी। छायावाद के मूल में इनकी प्रतिक्रिया स्वरूप अभिधात्मक अभिव्यक्ति के स्थान पर कल्पना प्रवणता स्थूल की बजाय सूक्ष्म की बाधा थी और बाहयपरक भाव वस्तु–बोध के स्थान पर वैयक्तिक वेदना तथा सौन्दर्य के प्रति नवीन अपरिमित अनुराग था।

छायावादी कवियों के लिए द्विवेदीयुग में ही स्वच्छन्दतावादी काव्य पूर्व–पीठिका बन चुका था इन कवियों में कल्पना एवं भावनाओं की नव कोमतला के साथ–साथ सर्वप्रथम अभिव्यंजनागत कुछ मृदुता भी दिखाई देने लगी थी।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि ''छायावाद के पूर्व ही हिन्दी में एक स्वच्छन्दवादी काव्य प्रवृत्ति का विकास हो रहा था। परन्तु काव्य में छायावाद की प्रतिष्ठा का श्रेय रामनरेश त्रिपाठी, मैथिलीशरण गुप्त आदि इन कवियों को नहीं, बल्कि बंगला के अघ्येता प्रसाद, निराला, पन्त ही छायावाद के प्रवर्तक कवि हैं। श्रीधर पाठक आदि की तरह प्रसाद जी की आरम्भिक कविताएँ भी स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्ति की द्योतक है।''और वस्तुत सन् 1905 से ही वे इस ढंग के काव्य की रचना कर रहे थे परन्तु छायावाद के अन्तर्गत नवीन शैली और नवीन भावों से ओत–प्रोत उनकी कविताएँ झरना' में ही प्रकाशित हुई इसमें सन्देह नहीं कि स्वच्छन्दवादी काव्य ने छायावादी की पुष्ट पृष्ठभूमि का निर्माण किया और यह भी कहा जा सकता है कि छायावाद स्वच्छन्दवादी कविता का नया चरम विकास था।

वैज्ञानिक भौतिक युग की उपज पूँजीवादी पद्वति और उसके द्वारा शोषण ने समाज को विनाश उत्पीड़न एवं व्यथा में डुबो दिया था इस युग का प्रभाव भी छायावादी कवियों पर पड़ना स्वाभाविक था वैयक्तिक जीवन में भी हमारे नव कवियों को बराबर विफलताओं का सामना करना पड़ रहा था। निराला का जीवन तो व्यथा की कहानी है। जीविका चलाना भी दूभर था, इस प्रकार वैयक्तिक एवं सामाजिक व्यथा से असंतोष की उग्र भावना हमारे कवियों में जागृत हुई एक ओर समाज की रूढ़ियों के प्रति असंतोष व्यंजित करने लगे दूसरी ओर बाह्य जीवन के संघर्षों के स्थान पर अपने ही अन्तर की झाँकी लेने लगे।

''छायावादी काव्य एक दृढ़ दार्शनिक भित्ति पर आरूढ़ है। स्वामी विवेकानन्द, स्वामी रामतीर्थ एवं गाँधी जी ने छायावादी काव्य के लिए दार्शनिक भूमिका निर्मित कर दी थी आर्दशात्मक आध्यात्मिक चिंताधारा का प्रभाव छायावादी काव्य पर खूब पाया जाता है।''

छायावादी काव्य का एक नया पक्ष जो विश्व–मानवतावादी है। वह उच्चतर आदर्श को रखता हुआ भी यथार्थपरक जगत से दूर का नहीं है। छायावादी काव्य का कल्पना सत्य भविष्य की आकांक्षाओं को मानवमात्र के स्वाभाविक विकास को तथा उसके ज्ञानवर्धन में किसी अतिवादी–चिन्तन के लक्ष्य को युगानुकूल सन्तुलित दृष्टि देता है।

इस काव्यधारा के बीज रूप में आदर्श और यथार्थ की गति को समरूपा माना गया है। यद्यपि अनुभूति की अभिव्यक्ति में व्यक्तित्व की मानसिक स्थिति का पूर्ण चित्र खींचा गया है। जो इस काव्य की व्यापकता का स्वरूप निर्माण करने में सहायक हुआ। यह निर्माण शक्ति आत्मा की ही है। इस अर्थ में छायावाद अनेक मुखी तथ्यों को एकरूप करने वाला काव्य पदार्थ है। स्वच्छन्दतावादी काव्य के विषय की प्रकृति पर प्रकाश डालते हुए राबर्ट लैगव्यूम ने ठीक ही कहा है– ''चिन्तन के क्षेत्र में अनेकत्व की एकता है।''

हिन्दी के छायावादी काव्य की प्रकृति तथा सांस्कृतिक पक्ष व्यक्ति धर्म के रूप में ही दिखाई देता है। छायावादी प्रकृति का मूल केवल इन्द्रियपरक संवेदना की निहित मे किसी भावात्मक आदर्श में नहीं आँका जा सकता।

''छायावाद युग की सांस्कृतिक और छायावादी काव्यधारा में प्रयुक्त संस्कृति में कोई अन्तर हो सकता है तो वह काव्य के माध्यम से युग के परिप्रेक्षण में तथा कवियों के मन पर पड़े प्रभावों के रूप में देखा जा सकता है।

हिन्दी में सन् 1913 से 1920 के लगभग एक विशिष्ट प्रकार की रचनायें पर्याप्त संख्या में मिलने लगी थी। यह रचनायें अपने वर्ण विषय, विषय प्रतिपादन तथा रचना शैली में द्विवेदी युगीन काव्य से भिन्न प्रकार की थी, इसमें द्विवेदी युगीन इतिवृत्तात्मकता के स्थान पर वस्तु के राग–विराग रूप के प्रति नीतिमूलक सुधारवाद तथा आदर्शवाद के स्थान पर स्वछन्द एवं कोमल भावों के प्रति प्रबन्ध के स्थान पर गीत रचना के प्रति और कला पक्ष में स्वच्छन्द अमूर्त उपमानों चित्रमयी भाषा नवीन प्रतीकों तथा शब्दों के लाक्षणिक प्रयोगों के प्रति रूचि प्रदर्शित की गयी। यह नवीन प्रकार की काव्य धारा 1925 से लेकर 1937 तक के अपने उत्कर्ष युग में हिन्दी के लिए वरदान सिद्ध हुई। ''उस युग की प्रतिनिधि पत्रिका 'सरस्वती' में छायावाद का सर्वप्रथम उल्लेख जून 1921 ई0 के अंक में मिलता है।'' इस तरह उन कविताओं के लिए हिन्दी छायावाद और अंग्रेजी 'मिस्टिसिज्म' शब्द चल पड़े और उन दोनों में भी हिन्दी छायावाद अधिक प्रचलित हुआ।

छायावादी काव्य में नारी–पुरूष की अतृप्त कामनाओं की तृप्ति मात्र न रह गयी है वरन् वह अपने स्वतन्त्र गुणों के विस्तार में अपनी पूर्ण शक्ति के साथ अवतरित हुई है। रीतिकालीन नारी के समस्त दृष्टिकोणों को अस्वीकार कर द्विवेदीयुगीन देवी नारी को छोड़ छायावाद ने प्रथम बार नारी के सार्वजनिक चारित्रिक गुणों पर सम्पूर्णता के साथ नयी दृष्टि डाली। ''नारी मानव जीवन की अन्तःशीलता में सदैव से ही एक प्रकम्प रही है। अतः संवेदनशील मन में काव्यसृजन के क्षणों की प्राथमिक स्थितियों में ''रति'' को ही स्वीकार किया गया है। छायावाद की विद्रोही भावना में नारी भी एक सांस्कृतिक विद्रोह के रूप

www.ignited.in

में उपस्थित हुई है।'' यह पुरूष जीवन के पथ की सहगामिनी उसके मन की आशा तथा कार्य की सबल है उसका स्वतन्त्र अस्तित्व भी है जो मानवीय चिन्ता के विविध रूपों की दिशा–दर्शिका का कार्य करती है।

विषय सूची

प्रथम अध्याय–	**निराला का जीवन वृत्त**
	पारिवारिक परिस्थितियाँ
	निराला का व्यक्तित्व
	राजनैतिक परिस्थितियाँ
	सामाजिक परिस्थितियाँ
	साहित्यिक परिस्थितियाँ
द्वितीय अध्याय–	**निराला का काव्य संसार**
	निराला की समस्त रचनाओं का संक्षिप्त विवेचन
	गद्य सम्बन्धी रचनायें
	साहित्यिक पत्रिकाओं का सम्पादन
	भाषा शैली
तृतीय अध्याय–	**छायावादी काव्य में नारी**
	छायावाद का संक्षिप्त विवेचन / परिभाषा
	सुमित्रानन्दन पन्त
	जयशंकर प्रसाद
चतुर्थ अध्याय–	**निराला के काव्य में नारी**
	निराला की रचनाओं में नारी
	निराला की दृष्टि में नारी
	नारी के विभिन्न रूप
उपसंहार	
सहायक ग्रन्थ सूची	

समाज में ऊँच–नीच मिटाना निराला का एक सामाजिक कर्तव्य था, उसी तरह नारी के समान अधिकारों का संघर्ष स्वाधीनता आन्दोलन का अभिन्न अंग था। पुरुष घर के बाहर अंग्रेजों का दास, घर में उसकी दास, पुरुष की दासी–नारी। इस दोहरी परतन्त्रता को खत्म किये बिना राष्ट्र कैसे स्वाधीन हो सकता हैं निराला जी ने स्वयं लिखा है– ''हम लोग स्वयं जिस तरह गुलाम है उसी तरह अपनी स्त्रियों को भी गुलाम बना रखा है–बल्कि उन्हें दासों की दासियां कर रखा हैं। इस महादैन्य से उन्हें शीघ्र मुक्ति देनी चाहिए।''

प्रकृति ने स्त्री व पुरुष को इस तरह बनाया कि उनका कार्य क्षेत्र अलग–अलग रहें। स्त्री कोमल है, पुरुष कठोर है। इस भेंद के अनुरुप उनके धर्म भी अलग–अलग हैं। निराला कहते है कि वे दिन बीत गये जब स्त्री के लिए यह प्रशंसा की बात समझी जाती थी। कि वह चित्र लिखे कपि को देखकर डर जाती थी, परन्तु आवश्यकता है हर एक मनुष्य के पुतलें में चाहे वह पुरुष हो या स्त्री, कोमल और कठोर दोनों भावों का विकास हो अब दोनों के लिए एक ही धर्म होना चाहिए। पुरुष के अभाव में स्त्री हाथ समेटकर निश्चेष्ट बैठी न रहे। उपार्जन से लेकर सन्तान पालन गृहकार्यआदि वह संभाल सके ऐसा रुप, ऐसी शिक्षा उसे मिलनी चाहिए। पहले दोनों के भाव और कार्य अलग–अलग थे अब दोनों के भाव और कार्यो का एक ही में साम्य होना आवश्यक है।

''स्त्रियों को स्वावलम्बी बनाना चाहिए क्योंकि 'स्वावलम्ब कोई पाप नही प्रत्युत पुण्य है।' हमारे देश के लोग इस समय आधे हाथों से काम करते हैं, उनके आधे हाथ निष्क्रिय है जब स्त्रियों के हाथ कार्य में लग जायेंगे, कार्य की सफलता हमें तभी प्राप्त होगी।''

निराला का कहना था कि इस घरेलू दासता का अन्त होना चाहिए। देश के राजनीतिक–सांस्कृतिक जीवन में पूरी शक्ति नही आ सकती जब तक समानता के आधार पर उसमें पुरुषो के साथ स्त्रियां भी भाग न लेंगी उन्होने लिखा–''अब घर के कोने में समाज तथा धर्म की साधना नहीं हो सकतीं। जमाने ने रुख बदल दिया है। हमारे देश की लड़कियों पर बड़े–बड़े उत्तरदायित्व आ पड़े है उन्हें वायु की तरह मुक्त रखने में हमारा कल्याण है तभी वे जाति–धर्म समाज के लिए कुछ कर सकेगी।

हम स्त्री–स्वतन्त्रता के कार्य में पुरुषों से मद्द करने के लिए कहते हैं क्योकि नारी ही भावी राष्ट्र की माता है, मूर्ख, पीड़ित और पराधीन माता से तेजस्वी, स्वतन्त्र और मेधावी बालक–बालिकायें नहीं पैदा हो सकती है जिससे राष्ट्र का सर्वाश जर्जर हो जाता है। निराला जी ने स्वयं लिखा है कि ''ज्ञान के बिना जीवन व्यर्थ है, निर्वाह होना कठिन है। स्वावलम्बन नहीं आता, 'स्वावलम्बन कोई पाप नहीं प्रत्युत पुण्य है।' हमारे देश के लोग इस समय आधे हाथों से काम करते है, उनके आधे हाथ निष्क्रिय है जब स्त्रियों के हाथ कार्य में लग जायेगें, कार्य की सफलता हमें तभी प्राप्त होगी।''

ग्रन्थ सूची

श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की प्रकाशित कृतियाँ

काव्य कृतियाँ प्रकाशन

1. अणिमा – लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, नवीन संस्करण–सन्–1975ई0

2. टनामिका – भारती भण्डार लीडर प्रेस, सम्वत्–2005

3. टपरा – बही ग्यारहवाँ संस्करण

4. असंकलित कविता – सम्पादक नवलकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन हेतु सन्–1985ई0

5. अर्चना – निरूपमा प्रकाशन शहराबाग, प्रयाग

6. आराधना – साहित्यकार संसद, प्रयाग प्रथम संस्करण सम्वत्–2010

7. कुकुरमुत्ता – लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद सन्– 1969ई0

8. गीत गुंज – हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय वाराणसी द्वितीय संस्करण

9. गीतिका – भारती भण्डार लीडर प्रेस, इलाहाबाद तृतीय संस्करण सम्वत्–2005

10. तुलसीदाय – भारती भण्डार लीडर प्रेस, इलाहाबाद तृतीय संस्करण सम्वत्–2005

11. नये पत्ते – लोक भारती प्रकाशन सन्–1973ई0

12. परिमल – गंगा पुस्तक माला कार्यालय, लखनऊ बारहवाँ संस्करण सन्– 1972ई0

13. बेला – निरूपमा प्रकाशन शहराबाग, प्रयाग